कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 07, (दिसंबर, 2023)
पृष्ठ संख्या 01–03

भिंडी की उन्नत खेती

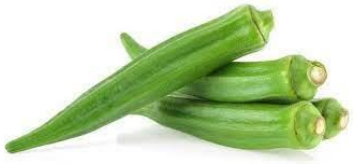

डॉ. विजय कुमार विमल[1], डॉ. अर्चना देवी[2] एवं प्रो. डी के. सिंह[3]
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान), [2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (पादप प्रजनन),
एवं [3]प्रभारी अधिकारी कृषि विज्ञान केंद्र, कोटवा आजमगढ़–I
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या उत्तर प्रदेश, भारत।
Email Id: vijaykumarvimal5@gmail.com

सब्जियों का स्थान हमारे जीवन में खास है, जिसमे से भिण्डी भारत की लोकप्रिय सब्जियाजों मे से एक है, जो देश के लगभग सभी भागों मे उगायी जाती है। भिण्डी में प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, ,खनिज लवण जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, के अलावा विटामिन ए, बी, सी, थायमिन एवं रिबोप्लेविन की भी पाया जाता है। सब्जियों में भिंडी का खास स्थान है जिसे लोग लेडी फिंगर या ओकरा के नाम से भी जानते हैं। भिंडी कच्चे हर फल के लिए ही नहीं बल्कि इसकी जड़ और तन गुड और शक्कर साफ करने में भी प्रयोग किया जाता है। भिंडी की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उन्नतशील प्रजातियां एवं वैज्ञानिक तरीके से इसकी खेती करनी चाहिए। जिससे हमें अच्छी पैदावार प्राप्त हो सके।

उन्नतशील प्रजातियांः–

प्रजातियां	पौधों की ऊचाई (सेमी)	उपज (टन/हे.)	प्रजातियों की विशेषता
परभानी क्रांति	80–100	9–12	फल गहरे हरे रंग एवं 15 सेमी लम्बे होते हैं।
काशी चमन	150–160	15–16	फल गहरे हरे रंग एवं 12से 15 सेमी लम्बे होते हैं।
पूसा भिण्डी–5	100–120	17–18	यह प्रजाति येलो वेन मोज़ेक वायरस रोग के प्रति प्रतिरोधी एवं फल 12सेमी. लम्बे होते हैं।
आजाद भिण्डी–4	125–130	10–12	यह प्रजाति यैलो वेन मौजक विषाणु अवरोधी है
वी.आर.ओ–6	130–175	13–18	यह प्रजाति यैलो वेन मौजक विषाणु अवरोधी है
वी.आर.ओ–10	130–175	14–16	यह प्रजाति यैलो वेन मौजक विषाणु अवरोधी है
आजाद क्रांति	125–130	15–18	यह प्रजाति यैलो वेन मौजक विषाणु अवरोधी है
हिसार उन्नत	90–120	12–13	यह प्रजाति यैलो वेन मौजक विषाणु अवरोधी है
अर्का अनामिका	120–150	12–15	फल मुलायम बिना रोंया के और फलों का डंठल लम्बा होता है।

जलवायुः–

भिंडी की जलवायु के लिए लंबे गर्म मौसम की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए औसतम तापक्रम 25 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड का तापमान उपयुक्त होता है। भिंडी के बुवाई लगभग 20 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक तापमान होने पर करनी चाहिए।

भूमि एवं भूमि की तैयारीः–

इसकी खेती जीवाश्म युक्त दोमट या बलुई दोमट मिट्टी में की जाती है, भिंडी की खेती के लिए भूमि का पीएच मान 6 से 7 होना सही रहता है, यदि खेत में नमी की मात्रा हो तो सबसे पहले पलेवा करके खेत की तीन से चार बार जुताई करके पाटा लगा देना चाहिए। भिंडी की जड़ गहरी होने के कारण भूमि की 25 से 30 सेंटीमीटर गहरी जुताई करना फायदेमंद होता है।

बोआई का समयः–

भिंडी की ग्रीष्मकालीन फसल को फरवरी से मार्च महीने तक आसानी से बुवाई कर सकते हैं। उत्तर भारत में व्यावसायिक दृष्टि से अगेति फसल का काफी महत्व है, अगेती भिंडी की बुवाई का समय फरवरी माह का प्रथम सप्ताह होता है। अगेती फसल मौसम पर निर्भर करती है, इसकी खेती के लिए औसतम तापक्रम 18 डिग्री सेल्सियस से कम होने पर जमने के बाद याद तो इसके बीज सड़ जाते हैं या इसमें वानस्पतिक वृद्धि रुक जाती है। यद्यपि इसकी बुवाई 15 फरवरी से जुलाई तक सिंचाई की सुविधा के अनुसार किसी भी समय की जा सकती है।

बीज की मात्रा व बोआई का तरीकाः–

भिंडी की सिंचित दशा में 12 से 15 किलोग्राम एवं असिंचित की दशा में 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। संकर किस्म के लिए 5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के लिए उपयुक्त होता है। बारिश के मौसम में भिंडी के लिए कतार से कतर की दूरी 40 से 45 सेंटीमीटर एवं पौध से पौध की दूरी 25 से 30 सेंटीमीटर की दूरी रखना बेहतर होता है। गर्मी के मौसम में भिंडी की बुवाई का कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 25 से 30 सेंटीमीटर एवं पौध से पौध की दूरी 15 से 20 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। बीज की बुवाई 2 से 3 सेंटीमीटर गहरी करनी चाहिए। बुवाई के पहले भिंडी के बीजों को 2 ग्राम मैंकोजेब या कार्बंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित बुआई करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरकः–

भिंडी की अच्छी पैदावार के लिए भूमि में 20 से 30 टन सड़ी गोबर की खाद मिलाना चाहिए। नाइट्रोजन 50 किलोग्राम (108 किलोग्राम यूरिया), फास्फोरस 50 किलोग्राम (312 सिंगल सुपर फास्फेट) एवं 50 किलोग्राम पोटाश (83 किलोग्राम मेरिट ऑफ पोटाश) की आवश्यता होती है। फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के पूर्व मिट्टी में मिला देना चाहिए एवं नाइट्रोजन की पूरी मात्रा बुवाई के 30 से 40 दिन बाद खड़ी फसल में टॉप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए।

निराई–गुड़ाईः–

भिंडी के खेत को समय–समय पर निराई गुड़ाई करके खरपतवार से दूर रखना चाहिए। 15 से 20 दिन बाद पहली निराई गुड़ाई फायदेमंद रहती है। खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी फ्लूक्लोरोलिन की 1 किलोग्राम या बेसालीन 1 किलोग्राम सक्रिय तत्व मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से नमी वाले खेत में बीज बोने के पहले मिलने से खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है, या फिर पेंडीमेथलीन (30ई सी) की 3.3 लीटर दवा 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के 24 घंटे के अंदर छिड़काव करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं तथा अच्छी पैदावार प्राप्त होती है।

सिंचाईः–

पहली सिंचाई जमाव के बाद एवं पहली पत्ती निकालने के समय करनी चाहिए, वरना बीज के सड़ने का खतरा बना रहता है। भिंडी की सिंचाई मार्च में 10 से 12 दिन, अप्रैल में 7 से 8 दिन और मई–जून के महीने में 4 से 5 दिन के अंतराल पर करते रहना चाहिए। बरसात के मौसम में यदि वर्षा

समय–समय पर होती रहती है तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है व बारिश अधिक होने पर पानी निकालने की व्यवस्था करनी चाहिए।

प्रमुख कीट एवं रोगः–

भिंडी का लाल बगः–

इसकी शिशु व वयस्क दोनों ही पौधे के विभिन्न भागों टहानियां, फूलों एवं फलों से रस को चूसते हैं जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है, जिससे फूल की संख्या कम हो जाती है, और जो फल बनते हैं उनका आकार भी छोटा हा जाता है। इस कीट का प्रकोप होने पर इथियान 50 ई.सी. 1.5लीटर या मिथाइल पैराथियान 50 ई.सी. 1.25 लीटर का 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए

रैड स्पाइडर माइटः–

यह कीट अपने मुख से पत्तियों की कोशिकाओं में छेद करता है जिससे जो द्रव निकलता है उसे यह माइट चूसता है, रोगी पत्तियां पीली पड़कर टेढ़ी–मेढ़ी हो जाती हैं और अधिक प्रकोप होने पर पूरा पौधा मर जाता है। इसकी रोकथाम के लिए साइपरमेथ्रिरीन 10ईसी का 0.5 मिली प्रति लीटर पानी में डालकर छिड़काव करना चाहिए।

तना एवं फल छेदकः–

इसकी सूंडियां फलों में छेद बना देती हैं, जिससे प्रभावित फल खाने योग्य नहीं रह जाते हैं तथा इससे ग्रसित फल सही आकार का नहीं हो पता है और टेढ़ा–मेढ़ा हो जाता है। इसकी सूंडिया तने के शीर्ष भागों को नुकसान पहुंचती हैं। जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है। इसके नियंत्रण के लिए ट्राइकोकार्ड (ट्राइकोग्रामा किलोनिस) नामक परजीवी कीट के 1,00,000 अंडे/प्यूपा प्रति हेक्टेयर की दर से छोड़ने चाहिए। अधिक मात्रा में कीटों का प्रकोप होने पर इमामेक्टिन बेंजोएट (3ग्राम/10लीटर) या फिप्रोनिल (2ग्राम/लीटर) का प्रयोग करना चाहिए।

पीत शीरा मौजैकः–

यह एक विषाणु जनित रोग है जो सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है। जिससे पत्तियां की शिराएं पीली पड़ने लगती है और पौधे की बढ़वार रूक जाती है। इस रोग से बचाव के लिए अवरोधी किस्म का चयन करना चाहिए। अधिक प्रकोप हाने पर डाईमिथोएट 30ई.सी. की 1.5 मिलीलिटर प्रति लीटर पानी में अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल की 5 मिलीलिटर प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

चूर्णिल आसिताः–

इस रोग में भिंडी की पुरानी निचली पत्तियों पर सफेद चूर्ण युक्त हल्के पीले धब्बे पड़ने लगते हैं और धब्बे काफी तेजी से फैलते हैं। यह सूखे मौसम व तापक्रम कम होने पर काफी तेजी से फैलता है। इसके रोग के लक्षण दिखाई देने पर बाविस्टीन 1ग्राम को प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

फलो की तुड़ाई एवं उपजः–

किस्म की गुणवत्ता के अनुसार 45 से 60 दिनों में फलों की तुड़ाई शुरू की जाती है एवं 4 से 5 दिनों के अंतराल पर फलों की तुड़ाई की जानी चाहिए क्योकि कड़ा होने पर उसमें रेशों की मात्रा बढ़ जाती है और बाजार मूल्य भी कम मिलता है। गर्मी की भिंडी फसल में उत्पादन 60 से 70 क्विंटल और बारिश की फसल में 80 से 100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता।